14 फरवरी, 2021

श्रमण मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में भाषण

- **सादर जय जिनेंद्र!!!**
- सबसे पहले मैं, अपने दिव्य ज्ञान से विश्व को आलोकित करने और सभी को ज्ञान प्रदान करने वाले भगवान पार्श्वनाथ के चरणों में कोटिश: नमन करता हूं। श्रमण मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज को सादर नमन करता हूँ।
- आज मेरा परम सौभाग्य है कि मैं दिगंबर जैन पार्श्वनाथ “तपोदय” तीर्थ क्षेत्र बिजोलियां में उपस्थित हूँ। यहां महाराज श्री सुधासागर जी का आशीर्वाद हम सबको प्राप्त हो रहा है।
- यह बड़े हर्ष का विषय है कि मुझे पाषाण से भगवान बनने के महान उत्सव श्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला है।
- अभी कुछ महीने पहले मैं पर्युषण पर्व की बेला में यहां आया था। तब से अब तक बिजोलियां में बहुत सकारात्मक बदलाव आ गए हैं। सच है कि जहां पूज्य मुनि श्री का प्रवास होता है, वह धरती स्वयं ही तीर्थ बन जाती है।
- गुरु जी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से कोटा के कई मंदिरों तथा नारेली, चांदखेड़ी, सिलोर, आंवा, भीलवाड़ा एवं सांगानेर जैसे कई क्षेत्रों का कायाकल्प हुआ है।
- गुरु जी का ध्यान सदैव जनकल्याणकारी कार्यों की तरफ ही रहता है। उनके आशीर्वाद से स्कूल, कॉलेज, गौशाला, हॉस्टल व अनाश्रितों के लिए अनेक कार्य योजनाएं मूर्त रूप लेती हैं।
- आज बिजोलियां में बहुत सुंदर मंदिर का निर्माण हो चुका है। अब यह क्षेत्र तीर्थ स्थल के साथ-साथ पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन गया है।
- मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी के सानिध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की जा रही है। वर्तमान संदर्भ में, इस प्रकार के आयोजन अत्यंत प्रासंगिक हैं तथा भावी पीढी को तीर्थंकरों की जीवनी से परिचित कराने के मुख्य साधन हैं। इसके लिए मैं सभी आयोजकों का साधुवाद करता हूँ।
- हमारी संस्कृति और विरासत का मूल मन्त्र अहिंसा, समानता एवं करुणा है। हमारी संस्कृति मानव ही नहीं बल्कि सभी जीवों, प्रकृति के सभी तत्वों के प्रति सहनशीलता और सम्मान का भाव रखना सिखाती है।
- भगवान महावीर से भी हमें यही शिक्षा मिली है कि मानवता का कल्याण द्वेष या क्रोध में नहीं बल्कि शांति और प्रेम में है। उनके द्वारा दी गई शिक्षाएं आज भी न सिर्फ प्रासंगिक हैं बल्कि मानवता की सेवा करने की भावना का आधार हैं।
- जैन धर्म का अपना एक स्वर्णिम इतिहास रहा है। जैन धर्म को मानने वाले लोगों का अपने राष्ट्र, अपने राज्य और अपने समाज के लिए कल्याण कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

- शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय इन सभी क्षेत्रों में आपका विशेष योगदान रहा है। आपकी सोच, अपने समाज के लिए ही नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए होती है।
- हमारे देश में सभी समुदायों को पुष्पित-पल्लवित होने का समान अवसर प्राप्त है और धर्म के उत्थान में गुरुजनों की प्रधान भूमिका होती है।
- आचार्य श्री का व्यक्तित्व, उनकी प्रेरणा, उनके उपदेश, श्रमणों के साथ-साथ सामान्य गृहस्थों को भी प्रेरित करते हैं। हमारे लिए यह गर्व का विषय है कि दिगंबर जैन पार्श्वनाथ तीर्थ क्षेत्र में हमें श्रमण मुनि सुधासागर जी का नेतृत्व एवं आशीर्वाद प्राप्त है।
- आचार्य जी ने पूरे देश का पद भ्रमण किया है और अनेक दीक्षाएँ दी हैं तथा अनेकानेक ग्रंथों का लेखन, दुर्लभ ग्रंथों का अनुवाद कर, पुनर्लेखन करके जिनवाणी का प्रचार-प्रसार किया है।
- आचार्य जी महाराज ने मेवाड़ क्षेत्र में अनेक जनोपकारी कार्य संपन्न करवाया है, नूतन जिनालय का निर्माण एवं अनेक अन्य पुण्य कार्य किये हैं। उन्होंने प्राचीन पौराणिक गाथाओं का ज्ञान वर्तमान आधुनिक काल के परिप्रेक्ष्य में दिया है।
- गुरुदेव जी ऐसे संत हैं जिन्होंने ऐसे अनेक पावन स्थलों का पुनरुद्धार किया, जिसे विस्मृत किया जा रहा था। अनेक पावन स्थलों को वर्तमान काल में विकसित करने के उनके प्रयासों के कारण ही आज हम उन स्थानों के बारे में जानते हैं।
- गुरुजी ने मानव जाति को व्यसनमुक्त करने के लिए अथक प्रयास किए हैं। गुरुजी सक्रिय रूप से वृक्षारोपण कार्यक्रमों में भी शामिल होते हैं।
- महाराज जी के कृतित्व से हमें यह सीखने को मिलता है कि देने की भावना के साथ जब हम आगे बढ़ते हैं तो हम मानव व मानवता के कल्याण के ध्वजवाहक होते हैं।
- **जैन दर्शन कहता है कि मुक्ति प्राप्त करने के लिए साधना करनी पड़ती है।**
- **परमार्थ के मार्ग रूपी साधना का स्वरूप क्या होना चाहिए, यह हम श्री सुधासागर जी के जीवन और कार्यों से ग्रहण कर सकते हैं।**
- मैं इस अवसर पर आचार्य श्री श्री 108 सुधासागर जी महाराज, जिनके पावन सान्निध्य में यह महोत्सव आयोजित किया जा रहा है, उनको भी नमन करता हूं।
- मैं आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य और शांति की कामना करता हूँ और इस आयोजन के उद्देश्य पूर्ण हों, ऐसी शुभेच्छा करता हूँ।
- साथ ही, मेरी कामना है कि आप सबका आशीर्वाद और स्नेह सदैव प्राप्त होता रहेगा। जय जिनेन्द्र।
